□□□□□□□□□□ □□□□□□□

जनसत्ता 14 सितंबर, 2014: कुलदीप कुमार के स्तंभ में 'हिंदी बनाम उर्दू' (7 सितंबर) पढ़ने तक मुझे यह जानकारी न थी कि सन् 74 में जेएनयू में हिंदी उर्दू विद्यार्थियों के लिए ये दोनों भाषाएं सीखना अनिवार्य कर दिया गया था। इसका उद्देश्य क्या था पता नहीं, पर मेरा अनुमान है कि यह प्रस्ताव लागू न किया गया होगा। जापान में हिंदी सीखने वाले छात्रों को उर्दू वर्णमाला का अभ्यास कराया जाता है ताकि वे प्लाट्स और फेलन के कोशों का फायदा उठा सकें। हिंदी शब्दकोशों पर कैसे भरोसा किया जा सकता है जबकि, हिंदी के सारे शब्दकोश खोल कर देख डालें, वहां तो नागरी की बारहखड़ी लड़खड़ा और भहरा रही है- 'अ' के बाद 'आ' नहीं 'अं' कूद पड़ता है!

हिंदी बनाम उर्दू जैसे प्रसंगों में मेरे मन में सदा यह संदेह पैदा होता है कि हमारे देश में भाषा और मातृभाषा में सचमुच क्या कोई तात्त्विक और व्यावहारिक भेद नहीं है?

पूर्वी उत्तर प्रदेश के पडरौना निवासी मुन्ना खां ने अपनी मातृभाषा उर्दू दर्ज कराई है तो इसका कारण मेरी समझ में यह आता है कि- एक, वह मुसलमान है और दो, कि वह पढ़-लिखे हैं और लिखते-पढ़ते हैं उर्दू लिपि में। वास्तव में उनकी मातृभाषा भोजपुरी है। उनके पड़ोसी मुन्ना लाल ने अपनी मातृभाषा हिंदी लिखाई है तो ऊपर की वजहों में अंतर हिंदू और नागरी लिपि का है।

नहीं, ये दोनों- मुन्ना लाल और मुन्ना खां साक्षी हैं झांसी के और अपनी मातृभाषा क्रमशः हिंदी उर्दू लिखा रहे हैं तो यह गलत बयानी है- दोनों ही बुंदेली बोलते हैं, बुंदेली उनकी मातृभाषा है। यहां तक कि दोनों अकेला, महाराष्ट्र, में जा बसें तो उनकी मातृभाषा वहीं की बोली होगी जहां से ये उठ कर आए हैं- वह पडरौना हो कि ललितपुर कि उन्नाव। फिर इन दो अकेला वासियों के लिए मराठी का दरजा क्या होगा? मराठी भाषा इनके लिए उपकरण है, तर्जुमाकर- वैसे ही जैसे कलछी उपकरण है, बटलोई से दाल या रसा निकाल कर परसने का (चाकू कांटा हो कि जापानी सलाइयां, भोजन करते समय इनके किसी काम की न होंगी!)

मोन्ना मोशाय के सामने बांग्ला छोड़ भाषा का कोई दूसरा नाम है ही नहीं- वह चटिगांव के हों कि बर्दवान के। यही बात मोन्नामा की तमिल पर लागू होती है। थोड़ा-बहुत बारीक भेद भले ही हो, घर-बाहर उसी भाषा का चलन है, जो उनकी मातृभाषा भी है। यों कहें कि मुन्ना द्वय से मातृभाषा और भाषा में भेद पहचानने में चूक हुई।

हरियाणवी बोलने वाले बालमुकुंद गुप्त की डलमऊ उन्नाव के बैसवाड़ी भाषी महावीर प्रसाद द्विवेदी से जब इतनी गर्मागर्मी हो गई, तब कल्पना करें, झांसी वाले मुन्ना पडरौना के मुन्ना से आपसी हाथापाई से बचने के लिए किस बोली में बोलें!

सैकड़ों बरसों से राजधानी बने रहे नगर दिल्ली के पास में होने के सबब मेरठ अलीगढ़ के छोटे से इलाके की बोली को इसी उद्देश्य से काट-तराश कर खड़ी बोली के रूप में गढ़ा गया। इस गढ़ंत रूप का एक नमूना गिलक्रिस्ट की 'हिंदी स्टोरी टेलर' (1806) में देखें-

ऐक औरत बेवकूफ अपने फूह□पने से चलते हु□ गरि गरि प□ती- और अपनी नजाकत पर बहान: करती- कसिूने दरयाफ्त कयिा कि यहि आपसे गरिती है- और नजाकत को बदनाम करती है- हंस कर कहने लगा सच है नाच न जाने आंगन टे□ा

यह जबान हदिू केलऍ है और न मुसलमान केलऍ- यह भाषा 'हदिी' अब केउत्तर भारत में कहीं केभी नवासी से, जनिकी मातृभाषा भोजपुरी से लेकर बीकानेरी तककोई भी बोली हो सकती है, कंपनी केअंगरेज साहब बहादुर केलऍ तर्जुमा करने केलऍ ग□ी गई थी□ इसका प्रकट प्रमाण है कि□कबंगाली बांग्ला बोल कर अपना मंतव्य पठान तकनहीं पहुंचा पाता, मगर वह भले ही टूटी-फूटी 'हदिी' में बोले, उसकी कही हुई बात का आधे से अधकिहसि्सा पश्तो बोलने वाला पठान समझ जा□गा□ इसी प्रकार तमलि बोल कर □ककश्मीरी को बात नहीं समझाई जा सकती, 'हदिी' दोनों केबीच संवाद करा देती है□ अगर □कमथुरा वासी, □कमंगलूर का, □कअरुणाचल का, ये तीन इकट्ठा बैठ कर बातें करना चाहें तो उनकेवार्तालाप बखूबी करा देगी 'हदिी'! उनकी मंडली में □कनेपाली केआ मलिने से भी बात वही रहेगी!

वह ग□ी जाती हुई खुरदुरी दुभाषयिा 'हदिी' पहा□ी नदी में ढुलकते-बहते रो□ों की भांतगिोल और चकिनी होती जा रही थी, इसकेनमूने 1850 केआसपास छपी पुस्तकों में देखने को मलि जाते हैं□ सन् 1900 केइधर-उधर 'सरस्वती' 'भारत मति्र' वह कहां से कहां पहुंच गई! ("हम वही भाषा लखिते हैं, जो हम बोलते हैं"- बालमुकुंद गुप्त)

हदिी □कतो ततिलौकी, फरि च□ी नीम! कैसे च□ी नीम का खुलासा करते थो□ा संकोच होता है, क्योंकमिेरे अपने गुरु तथा गुरुस्थानीय जनों केनाम भी साथ ही जाहरि होते हैं□

बनारस वशि्ववदि्यालय में हदिी वभिाग खुला, सन् 1921 में□ (अब से महज छह बरस बाद वहां आयोजति शताब्दी समारोह की मन गुदगुदाने वाली कल्पना तो कीजि□!) बाबू श्यामसुंदर दास वभिाग केअध्यक्ष□ 'हदिी साहति्य कोश' (प्रकाशकज्ञानमंडल) भाग दो, पेज 569 पर आपकेद्वारा रचे ग□ ग्रंथों की सूची छपी है- इसमें 'पाठ्यपुस्तकें' केआगे तीस से ऊपर पुस्तकें हैं! (मैंने कुल ग्रंथों की संख्या जानने केलऍ गनिना शुरू कयिा, मगर बीच में हमि्मत छूट गई!) हदिी में हर वषिय पर प्रकाशति साहति्य, पुस्तक, पत्र, पत्रकिा केरूप में सन् 21 में मौजूद था तो! नहीं, इस बाजारू माल को वशि्ववदि्यालय स्तरीय नहीं माना जा सकता! वशि्ववदि्यालय में वही पुस्तकमान्य हो सकती है, जसिे वशि्ववदि्यालय तकशक्षिा प्राप्त और इसकेभी ऊपर वशि्ववदि्यालय में पदासीन अध्यापकने लखिा हो! इसका सबूत चाहि□? राहुलजी और कशिोरीदास वाजपेयी केनाम याद करि□!

मेरे गुरु श्री धीरेंद्र वर्मा ने सन् 1921 में इलाहाबाद युनवरि्सटी से □म□ कयिा था, संस्कृत में□ महामहोपाध्याय सर डॉ. गंगानाथ झा केशषि्य थे□ गंगानाथजी युनवरि्सटी केवाइस चांसलर, तब सीनेट में तूती बोलती थी, डॉ. ताराचंद, डॉ. ईश्वरी प्रसाद, डॉ. गणेश प्रसाद- पूरा दल-बल था इनका! धीरेंद्रजी ने दल-बल केसाथ गंगानाथजी से ल□-झग□ कर (जी हां, ल□-झग□ कर) अलग हदिी वभिाग खुलवाया□ जो कार्य बनारस में दासजी ने कयिा था, उसी केजो□ का काम धीरेंद्रजी ने शोध परंपरा कायम करने- और अपने शषि्य, प्रशषि्य की लंबी पांत ख□ी कर देने में कयिा! सन् साठ में मैं वहां लेक्चरर था, तब डॉ. धीरेंद्र वर्माजी अध्यक्ष थे, और उनसे दोयम डॉ माताप्रसाद गुप्त से लेकर मुझ तक, सब धीरेंद्र वर्माजी केऔर □कसे दूसरे से तीसरे केप□ा□ हु□ प्राध्यापकथे! इसमें आपत्तजिनकतो कुछ भी नहीं! सारे उत्तर भारत (और नीचे भी!) डंका बजता था वशि्ववदि्यालयी हदिी का!

भाषा- मातृभाषा भी- प्रकृत्या अनुकरण मूलक, नकलची होती है! यही वभिागी हदिी आकाशवाणी बनी, दफ्तरों में हदिी अफसर बनी, संपादकों की व्यास पीठ पर वरिाजी, टीवी पर वेदपाठयिों केसामान हस्त संचालन करती लंगर बन कर ख□ी हुई- आज भी यह क्रम चल रहा है और भवषि्य में भी चलता रहेगा□ 'नल की औ नलनीर की □कैसी गतहिोय!' नरिंतर अधोगतपिाती भई अब तो वशि्ववदि्यालयी हदिी 'जमीनी हकीकत' से टेकऑफकर, अर्थ- अर्थात

मायने- के दायरे से बाहर नकिल गई! लखिे हु□ का अर्थ या तो स्वयं उसका लेखक समझे या खुदा समझे!

यह हश्र है सारे संसार में बेजो□ और अनोखी ऐसी अमरबेल सम भाषा का जसिने अपना व्याकरण संस्कृत तक को ठेंगा दखिाते हु□, केवल श्रुत के सहारे तैयार कयिा था! इसके प्रयोक्ता हम यद िक्रमदरद्रिी न हु□ होते तो आज के दनि यह चार ठौर मजूरी करते हु□ भी तमाम बोलयिों की अर्थ गौरव से संपन्न शब्द संपदा को बटोरती समेटती हुई, अंगरेजी और चीनी भाषाओं को पीछे छो□ गई होती!

उर्दू को भी उचति स्थान दयिा जा□ - भला क्यों नहीं! हदिी के साथ-साथ- जी नहीं! मुझे क्षमा करें, आप फरि वही भूल कर रहे हैं! भाषा और लपि मिें घालमेल कर□ मेरे मन तो कुछ और ही है! वशि्ववदि्यालय स्तर के हदिी प्राध्यापक को उर्दू क्या, फारसी भाषा में भी दक्ष होना चाहि□□ हरिऔध, चंद्रबली पांडेय, काशकिे शविप्रसाद मशि्र 'रुद्र', हदिी के ये प्रतषि्ठति लेखक संस्कृत, फारसी, अरबी के पारदर्शी वदि्वान तेहरान युनवरि्सटिी के स्नातक न थे! और नहीं तो वासुदेवशरण अग्रवालजी की पदमावत पर टीका के□ काध पन्ने उलट-पलट कर देख लीजि□□ जापान में उर्दू के □क प्राध्यापक ने मुझ हदिी वाले से सही उत्तर पाने की उम्मीद रखते हु□ पूछा था क ि'दा□' संस्कृत मूल का शब्द होकर भी फारसी में '□ैन' से क्यों लखिा जाता है!

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta